रामकृष्ण मिशन

संस्थापक :- स्वामी विवेकानंद
स्थापना : - 1 मई 1897
स्थल : - कोलकाता

रामकृष्ण मिशन की मूल प्रेरणा रामकृष्ण परमहंस की है। रामकृष्ण परमहंस की स्मृति अलौकिक और धर्म ज्ञान अद्वितीय था। उन्होंने ईश्वर की आराधना, प्रार्थना में अपना जीवन व्यतीत किया। गहरे अध्ययन और चिंतन के बाद उन्होंने कहा "सभी धर्मों का मूल तत्व 'परमात्मा की प्राप्ति' है।" उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु के संदेशों से प्रेरित होकर 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना 1 मई 1897 में कोलकाता में की।स्वामी विवेकानंद का जन्म कोलकाता में 12 जनवरी 1863 को हुआ। वे वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उनके द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन का ध्येय वाक्य है "आत्मनों मोक्षार्थ जगत हिताय च" अर्थात "अपने मोक्ष और संसार के हित के लिए।" ध्येय के अनुसार समस्त संसार के हित के लिए ही रामकृष्ण मिशन कार्यरत है। स्वामी विवेकानंद केवल संत ही नहीं एक महान देशभक्त वक्ता विचारक लेखक और मानव प्रेमी भी थे। उन्होंने सभी को महत्वपूर्ण संदेश दिया "उठो, जागो, और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो। " अपने नर जन्म को सफल करो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए। "

रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन के तीन उद्देश्य निश्चित किए थे।

1) वेदांत का प्रचार
2) विभिन्न धर्मों के मध्य सौहार्द बढ़ाना
3) गरीबों की सेवा ही ईश्वर सेवा

वेदांत का प्रचार स्वामी विवेकानंद ने भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी किया आज भी रामकृष्ण मिशन की लगभग 130 शाखाएं भारत और पूरे विश्व में स्थापित है।

रामकृष्ण मिशन के सिद्धांत

1) ईश्वर एक है और अध्यात्मवाद का अनुसरण कर ब्रहम में लीन हो जाना ही मनुष्य का परम धर्म है।
2) प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म में रहना चाहिए और उसी से प्रेम करना चाहिए।
3) हिंदू धर्म के समस्त अंग सच्चे तथा रक्षणीय है तथा हिंदू सभ्यता अति प्राचीन सुंदर एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है।
4) आत्मा अजर - अमर है।
5) ज्ञान और भक्ति एक ही लक्ष्य की ओर ले जाने वाले दो मार्ग हैं।
6) हिंदू धर्म का आधार वेदांत धर्म है। वेदांत के आधार पर ही धर्म के स्वरूप को समझा जा सकता है।
7) पश्चिमी सभ्यता भौतिकता और छल से युक्त है अतः हिंदुओं को अपने धर्म, जाति, समाज को पश्चिमी सभ्यता से दूर रखना चाहिए।

8) मनुष्य की आत्मा ईश्वर है। तथा उसे परमात्मा के दर्शन किसी भी स्थान में हो सकते हैं। मूर्ति पूजा उपासना का अति शुद्ध रूप है।

रामकृष्ण मिशन के कार्य : -

हिंदू संस्कृति को गौरवान्वित किया: - रामकृष्ण मिशन हिंदू धर्म के गौरव को विश्वभर में प्रसारित किया। हिंदू धर्मा नवजागरण को उच्चतम स्तर तक पहुंचाने का श्रेय य रामकृष्ण मिशन को ही जाता है 11 सितंबर 1893 को विश्व धर्म संसद शिकागो में स्वामी विवेकानंद ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि "अमेरिका निवासी भाइयों और बहनों"। इन शब्दों से उन्होने सभी का दिल जीत लिया। स्वामी विवेकानंद ने अपने प्रवचन और भाषणों से पूरे विश्व को प्रभावित कर दिया था।

आध्यात्मिकता का महत्व : - स्वामी विवेकानंद को भारत की मूल्य शक्ति आध्यात्मिकता पर गहरा विश्वास था। उनकी यह अध्यात्मिकता कोई सीमित अर्थ लिए आध्यात्मिकता नहीं है बल्कि उसमें धार्मिक अंध नियमों से मुक्ति की अभिलाषा है, विविधता में एकता का अधिष्ठान है। वे कहते हैं "समस्त स्वस्थ सामाजिक परिवर्तन अपने भीतर काम करने वाली आध्यात्मिक शक्तियों के व्यक्त रूप में होते हैं और यदि वे बलशाली और सुव्यवस्थित हो तो समाज अपने आप को इस तरह से ढाल लेता है। " उनके अनुसार सिर्फ अद्वैत वेदांत के आधार पर ही विज्ञान और धर्म साथ साथ चल सकते हैं

रुढि परंपराओं का विरोध : - स्वामी जी ने रूढ़िवादिता अंधविश्वास आडंबर पाखंड विकृत परंपराएं आदि की कटु आलोचना की। धर्म के नाम पर किए जाने वाले कर्मकांड के कारण उन्होने पंडितों पर कड़ी आलोचना की।

नारी मुक्ति : - नारी को मुक्त करने का एक कहीं माध्यम है शिक्षा इसलिए स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया यदि स्त्री शिक्षित होगी तभी वह स्वयं की भाग्यविधाता बनेगी स्वामी जी कहते थे हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए जहां वे अपनी समस्या को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके उनके लिए यह काम न कोई और कर सकता है और में किसी को करना चाहिए हमारी भारतीय नारियां संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भांति इसे करने की क्षमता रखती है। "

शिक्षा का प्रचार प्रसार : - रामकृष्ण मिशन ने कई प्राइमरी हाई स्कूल एवं कॉलेजों की स्थापना की जो आज भी चल रहे हैं रामकृष्ण मिशन के कई पुस्तकालय भी है। रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित एक विश्वविद्यालय भी है। भारत सरकार ने यूजीसी अधिनियम 1956 की धारा 3 के अंतर्गत इसे मानित विश्वविद्यालय घोषित किया है।इसके चार कैंपस है जो बैलूड, पश्चिम बंगाल, कोयंबटूर, रांची में स्थित है । यह विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों की शिक्षा देता है जिनमें ग्रामीण एवं जनजाति विकास से लेकर अपंगता प्रबंधन तथा विशेष शिक्षा मूलभूत विज्ञान भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिक विरासत आदि सम्मिलित है।
रामकृष्ण मिशन द्वारा कृषि,कला एवं शिल्प के प्रशिक्षण के साथ-साथ पुस्तकें एवं पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती है।

स्वामी विवेकानंद शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, चरित्र गठन कर सके और विचारों का सामंजस्य कर सके वही वास्तव में शिक्षित कहलाने योग्य है। "स्वामी जी का शैक्षिक चिंतन अत्यंत व्यापक है। वे भारतीय और पाश्चात्य शिक्षा का समन्वय करना चाहते थे। स्वामी जी शिक्षा को व्यवसाय मुलक, जीवन मूल्यों से परिपूर्ण, विचारोत्तेजक बनाना चाहते थे ।

जातिभेद को दूर किया : - स्वामी जी छुआछूत के घोर विरोधी थे तथा जन्म पर आधारित वर्ण भेद को नहीं मानते थे।अतः उन्होने जातिभेद को दूर करने का प्रयास किया।

जनता की सेवा : - रामकृष्ण मिशन ने जनता की सेवा का व्रत लिया था। उनकी तरफ से कई अनाथालय, औषधालय, शिशुपालन ग्रुह, स्त्री कल्याण गृह खोले। साथ ही रामकृष्ण मिशन के सदस्य अकाल, महामारी, बाढ़ तथा अन्य आपदाओं के समय सदैव आगे रहते थे।

स्वास्थ्य सुविधा का अभाव देखकर रामकृष्ण मिशन द्वारा विवेकानंद पॉलीक्लिनिक नामक एक मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल खोला। इस अस्पताल में चिकित्सा सुविधा होती ही है साथ में आस-पास के गांवों में भी स्वास्थ्य कार्यक्रमों को चलाया जाता है।

युवाओं में प्रबोधन : - स्वामी विवेकानंद ने 'योग' 'राजयोग' तथा 'ज्ञानयोग' जैसे ग्रंथों की रचना कर युवा जगत को एक नई राह दिखाई है। जिसका प्रभाव युवाओं पर युगों युगों तक छाया रहेगा। भारत में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए वे युवाओं को भी तत्पर होने का संदेश देते हैं। इसके लिए वे युवाओं में आत्मविश्वास, वीरता, अभय, इच्छा शक्ति, आत्मनिर्भरता और उन्ही का विस्तार चाहते हैं। वे मानते हैं कि युवाओं के माध्यम से देश का पुनरुत्थान हो सकता है।

निष्कर्ष : - स्वामी विवेकानंद ने समाज सेवा, जन्म, शिक्षा, धार्मिक पुनरुत्थान और शिक्षा के द्वारा भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया। स्वामी जी का शिक्षा संबंधी चिंतन उनके विचार अत्यंत मौलिक है। स्वामी जी ने भारत के संपूर्ण परिवर्तन के लिए किसी एक वर्ग को पर्याप्त नहीं माना है जब सभी वर्ग परिवर्तन की दिशा में कार्यरत होंगे तभी भारत में परिवर्तन हो सकेगा इसलिए युवा, स्त्री, निर्धन, कामगार, किसान सभी को स्वामी जी ने जागृत करने का प्रयास किया।